महावीर कैंसर संस्थान, फुलवारीशरीफ, पटना के 'मुफ्त भोजन योजना' के शुभारम्भ कार्यक्रम में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

(स्थान–महावीर कैंसर संस्थान, फुलवारीशरीफ, पटना, दिनांक–10.08.2016, समय–4.00 बजे अप॰)

महावीर स्थान न्यास समिति के सचिव आचार्य किशोर कुणाल जी, महावीर कैंसर संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री वी॰ एस॰ दूबे जी, महावीर कैंसर संस्थान के निदेशक डॉ॰ विजय कुमार गहलोत जी, संस्थान के अतिरिक्त निदेशक श्री रमेश लाल जी, एसोसियेट डाइरेक्टर डॉ॰ मनीषा सिंह जी, इमारत–ए– शरिया के सचिव मौलाना ए॰ आर॰ काशमी जी, संस्थान के उपस्थित सभी चिकित्सकगण, स्वास्थ्य कार्यकर्त्तागण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!

महावीर कैंसर संस्थान के बारे में अबतक जो जाना है, उसमें सबसे बड़ी बात मुझे यह प्रभावित कर रही है कि विभिन्न जाति–धर्मों एवं अमीर–गरीब में फर्क किये बिना यह संस्थान कैंसर जैसे दुःसाध्य रोग की चिकित्सा में सफलतापूर्वक लगा हुआ है। महावीर मंदिर में दान–पात्र से इतना बड़ा अस्पताल खड़ा करना और उसे सफलतापूर्वक चलाना अत्यंत आश्चर्यकारी किन्तु सराहनीय प्रयास है।

मुझे बताया गया है कि संस्थान का प्रबंधन अत्यंत कम खर्च में गरीब कैंसर के मरीजों को अत्याधुनिक पद्धति से कैंसर की चिकित्सा में रत है; इसकी जितनी भी सराहना की जाए

वह कम है। प्रबंधन निरन्तर कैंसर रोगियों को अधिक से अधिक सुविधाएँ प्रदान करने के बारे में चिंता करता है और चिंतन की परिकल्पना को इसके संस्थापक आचार्य किशोर कुणाल साकार करने में लग जाते हैं यह बड़ी बात है।

अभी–अभी मैंने ''मुफ्त भोजन योजना'' का उद्घाटन किया है। मुझे बताया गया कि आरम्भ में सभी कैंसर रोगियों को प्रत्येक शाम का भोजन मुफ्त दिया जाएगा और फिर आगे चलकर इसे कालबद्ध रूप से विस्तारित किया जाएगा।

यहाँ महान बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामाजी ने 12 दिसम्बर 1998 को पधारकर व्व्क का उद्घाटन और ''कोबाल्ट यूनिट'' का शुभारम्भ किया था।

इस संस्थान में विभिन्न अवसरों पर पूर्व राष्ट्रपति डॉ॰ ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम, श्रीमती प्रतिभादेवी सिंह पाटिल, पूर्व उप–राष्ट्रपति भैरो सिंह शेखावत पधार चुके हैं। निरंतर प्रगति करते हुए इस संस्थान में कैंसर का सम्पूर्ण इलाज किया जा रहा है। नये–नये उपकरण जो कि रोगों के निदान व अनुसंधान में जरुरी हैं, लगाये जा रहे हैं।

मुझे बताया गया है कि इस समय टाटा मेमोरियल अस्पताल के बाद महावीर कैंसर संस्थान देश का दूसरा सबसे बड़ा अस्पताल हो चुका है जहाँ पूरे बिहार, उत्तर पूर्वी हिन्दुस्तान, नेपाल व बंगला देश से मरीज आते हैं।

मुझे यह भी जानकारी दी गई है कि यहाँ चिकित्सारत कैंसर रोगियों को मात्र 300 रुपये में प्रति यूनिट रक्त उपलब्ध कराया जाता है, जो भारत में अन्यत्र कहीं नहीं है।

18 साल से कम उम्र के बच्चों को महावीर मंदिर से तत्काल उन्हें 15 हजार रुपये की राशि इलाज के लिये उपलब्ध करायी जाती है। साथ ही अन्य गरीब मरीजों को 10 हजार रुपया प्रति मरीज की दर से अनुदान राशि उपलब्ध करायी जाती है। साधु–संतों की पूर्णतः निःशुल्क चिकित्सा करायी जाती है – यह कार्य अन्य अस्पतालों के लिए भी अनुकरणीय है।

इस रोग से मुक्ति पानेवाले अधिकतर इंसानों के बारे में किए गए सर्वेक्षणों से पता चला है कि ये सभी रोगी इस बीमारी से जूझने के दौरान भी 'जिजीविषा' अर्थात् जिन्दगी जीने की अपार इच्छा रखते थे। देश–विदेश के कई महत्वपूर्ण लोग चाहे वे मनीषा कोईराला हों या क्रिकेट खिलाड़ी युवराज सिंह या फिर टेनिस खिलाड़ी मार्टिना नवरातिलोवा – ये सभी अपने जीवन में बेहद उत्साही प्रकृति के लोग रहे हैं। इनके उत्साह और जीवन के प्रति सकारात्मक नजरिये ने ही इस रोग से उबरने में इनकी भरपूर मदद की। दरअसल, 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।' ये सभी कैंसर पर जीत इस लिए हासिल कर पाए चूँकि इन लोगों ने मन से कभी हार नहीं मानी।

परन्तु, दूसरी ओर जब हम इस रोग की भयावहता और तेजी से हो रहे प्रसार पर जब अपनी नजर दौड़ाते हैं, तब सिक्के का दूसरा पक्ष दिखता है। आज यह वास्ताविकता है कि पूरे विश्व में 2 करोड़ से अधिक लोग कैंसरग्रस्त हैं और इनमें प्रत्येक वर्ष 90 लाख रोगियों का और इजाफा हो रहा है। एक अनुमान के मुताबिक 40 लाख व्यक्तियों की प्रत्येक वर्ष मृत्यु कैंसर के कारण हो रही है। भारत में भी प्रत्येक वर्ष 1 लाख से अधिक व्यक्ति इस रोग से प्रभावित हो रहे हैं। आंकड़ों के मुताबिक भारत में कैंसर से मरने वाले व्यक्तियों में 34 प्रतिशत लोग धूम्रपान/तम्बाकू का सेवन करने वाले हैं। स्पष्ट है, ऐसी भयावह स्थिति में इस रोग के निदान और निराकरण को लेकर हमें अपनी तैयारियों को और अधिक तेज और सुदृढ़ करना होगा। समाज में जो सुविधा–सम्पन्न और समर्थ लोग हैं, वे तो इस बीमारी के काफी खर्चीले इलाज का बोझ किसी तरह उठा लेते हैं, परन्तु गाँवों और शहर की तंग बस्तियों में रहनेवाली हमारे देश की गरीब जनता तो इस बीमारी से अपना बचाव कर पाने में बिल्कुल ही सक्षम नहीं है। केन्द्र और राज्य सरकारें भी इस दिशा में सोच रही हैं और बहुत कुछ निर्णय तेजी से कार्यान्वित भी हो रहे हैं। परन्तु हमारे बिहार जैसे प्रान्त को, जहाँ कि स्वास्थ्य– सुविधाओं के प्रक्षेत्र में काफी कुछ किए जाने की अब भी गुंजाइश है, को कैंसर रोग के इलाज के लिए चरणबद्ध महत्वाकांक्षी योजनाएँ शुरू करनी होंगी। पटना एम्स, पी॰एम॰सी॰एच॰, आई॰जी॰एम॰ एस॰ तथा महावीर कैंसर संस्थान

आदि प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थानों को कैंसर रोग के इलाज की दृष्टि से भी समग्र रूप में विकसित किए जाने की आवश्यकता है। मुझे विश्वास है, केन्द्र सरकार और राज्य सरकार – दोनों इस दिशा में अपने समेकित प्रयासों से राज्य की गरीब आबादी को कैंसर सहित अन्य बड़ी बीमारियों से बचाव, उत्कृष्ट चिकित्सा आदि के लिए सुविधा मुहैया करायेंगी। मैं चिकित्सा प्रक्षेत्र में निरन्तर शोधरत चिकित्सकों–वैज्ञानिकों आदि से भी अनुरोध करता हूँ कि वे कैंसर जैसी बीमारी से मुक्ति के लिए 'टीकाकरण' (Immunization) के विकल्प का भी पता लगायें, जो आम आदमी की पहुँच के दायरे में हो।

मैं आशा करता हूँ कि महावीर कैंसर संस्थान इसी प्रकार गरीब कैंसर मरीजों की सहायता, चिकित्सा और सुखद भविष्य के लिए सतत् प्रयत्नशील रहेगा।

आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।